APPENDIX. 5

ART EDUCATION SYLLABUS FOR CLASS IX & X – R.S.B.S.E.

चित्रकला

कक्षा –9

कक्षा 9 के लिए चित्रकला विषय में निर्धारित पाठ्यक्रम के बिन्दु 1,2,3 के सन्दर्भ में क्रियान्विति कराते समय अध्यापकों को निम्नलिखित बातों को विशेष ध्यान रखना आवश्यक है :-

1. **प्राकृतिक व मानव रचित आकारों का मुक्त हस्त रेखांकन-अभ्यास**

इस प्रकरण में बालक अपने वातावरण में जिन वस्तुओं को देखता है, अध्यापक का दायित्व यह है कि वह बालक को उन वस्तुओं के सूक्ष्म निरीक्षण की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करें जैसे-वस्तुओं की बनावट, आकार,स्थितियां, वस्तुओं की सादृश्यता, विभिन्नतायें तथा वस्तु के समस्त स्वरूप का बालक सूक्ष्मता से निरीक्षण करे एवं उन्हे पुनः स्मरण करने की क्षमता का विकास कर सके। इस प्रकरण में कुछ वस्तुऐं जड़ एवं स्थिर प्रकृति की है जैसे-कुर्सी, दरवाजा,चड्डानें आदि। ऐसी वस्तुओं को रेखांकित करने में गति बाधक नहीं बनती। अतः अध्यापक ऐसी वस्तुओं के अंगों का पृथक-पृथक अभ्यास कराकर भी सम्पूर्ण वस्तु की प्रतीति कराने एवं उसके संश्लेषणात्मक स्परूप को संयोजित करने तथा सम्पूर्ण आकार देने हेतु छात्र को प्रेरित कर सकेगा। परन्तु गतिमान वस्तुएँ जैसे -बाजार,चिड़ियाघर, मेले, उत्सव आदि को रेखांकित कराते समय उन आकारों के समग्र रूप एवं प्रभाव को अंकित करने का प्रयास कराया जाना उचित होगा और समग्र प्रभाव के निरीक्षण के प्रति छात्रों को प्रेरित किया जावे। इस परिस्थियों में इकाई के रूप में वस्तु का निरीक्षण कराया जाना आवश्यक नहीं है।

2. **दैनिक जीवन से सम्बन्धित विष्यों का अंकन**

इस प्रकरण में प्रतिदिन सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों तथा बालक की स्व अनुभूतियों, घटनाओं आदि के अंकन पर बल दिया गया है, जैसे- दूध वाला, डाकिया, धोबी, खिलाड़ी, मेले, उत्सव, लोक कथाओं, जीवन में घटी घटनाओं, स्वप्न, मदारी, सपेरे,

बंजारे, रेल्वे स्टेशन आदि अनेकानेक विषयों में से किन्ही 8 विषयों पर आधारित चित्रांकन। इन अंकनों में छात्र को विभिन्न चरित्रों के व्यवहार, वेशभूषा किया-कलापों का सूक्ष्म निरीक्षण करने के प्रति रूचि जागृत की जानी चाहिये जैसे- सपेरा और बंजारा किन-किन कियाओं, साधन सामग्रियों से एक दूसरे से भिन्न प्रतीत होता हैं। व्यक्तिगत भिन्नताओं से ही चरित्र एक दूसरे से अलग प्रतीत होगें। साथ ही छात्रों के स्वानुभूत अनुभवों को पुनः स्मरण करने, कल्पनाशीलता को बढ़ावा दिये जाने का प्रयास कराया जाना चाहिये। इस हेतु छात्रों को विभिन्न चरित्रों के किया-कलापों, वेशभूषाओं का निकट से सूक्ष्म निरीक्षण करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

चित्रांकन विधा - इसमें तकनीकी बारीकियों के प्रति विशेष आग्रह नहीं दिया जाकर बालकों को उनकी विभिन्न अभिव्यक्ति के लिए किया-कलापों एवं समग्र प्रभावों को ध्यान में रखते हुए पूर्ण स्वतन्त्रता के साथ चित्रांकन कराने को प्रेरित किया जाना उचित होगा। साथ ही विभिन्न आकारों के स्थूल रूप एवं पोश्चर्स (भंगिमायें) तथा मुद्राओं के सरल अंकन के प्रति छात्र को प्रेरित किया जावे।

3. स्कूल गतिविधियों, नाट्क, उत्सवों, हाट बाजारों या तत्कालीन राजनैतिक व सामाजिक घट्नाओं पर कम से कम 2 पोस्टर बनाना

पेस्टर चित्रण करते समय अध्यापक बालकों को विद्यालय में आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों, उत्सवों एवं पर्वो के प्रचार-प्रसार हेतु पोस्टर तैयार करावें। इसी प्रकार विद्यालय के बाहर भी यदि कोई सामाजिक या राजनैतिक आयोजन हो रहे हों तो उनके सूचनात्मक पोस्टर तैयार करने हेतु छात्रों को प्रोत्साहित किया जावे। पोस्टर बनाते समय ध्यान देने योग्य निर्देशः-

(1) पोस्टर-सूचनात्मक हो।
(2) इनमें कम से कम वाक्यों में समग्र बात प्रकट करने की क्षमता हो।
(3) पोस्टर -अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने में सक्षम हो।
(4) विषय विशिष्ट को प्रदर्शित करने वाले चित्र या प्रतीक बने हुये हों।
(5) मुख्य विषयों को आकार या रंग के माध्यम से मुख्य रूप से दर्शाया जाय।
(6) एक पोस्टर में एक विषय वस्तु को ही दर्शाया जाय।

भाग "ब"

स्मन्वित प्रयोग

कला शिक्षा के तीनों सम्भागों (1) नाट्यकला (2) चित्रकला (3) संगीत के सम्बन्धित प्रयोग व अभ्यास

इसके अन्तर्गत विद्यालय एवं समुदाय में होने वाले उत्सवों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा अन्य पर्वो आदि पर तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुरूप चित्रांकन सजावट, नृत्य, नाट्य संगीत कला प्रदर्शनी आदि के आयोजन में यथेष्ट योगदान हेतु छात्रों के सामूहिक प्रयास सम्मिलित है। चित्रकला विषय का ऐसे अवसरों पर आवश्यकता अनुरूप मांडने, अल्पनायें, कोलाज, पेपर कटिंग, फूल पत्तियों की सजावट, आदर्श वाक्य लेखन के द्वारा विद्यालयीय वातावरण को सुन्दरता प्रदान की जा सकती है। परन्तु इस सज्जा का स्परूप सादा एवं सुरुचिपूर्ण हो- ये सज्जायें जहां तक संभव हो सके स्थानीय सुलभ साधनों से की जावे। यह पूर्णतया अस्थायी हो, यदि स्थायी भी हो तो इस प्रकार की हों कि उनमें परिवर्तन एवं परिवर्द्धन के द्वारा नये आकार का सृजन संभव हो सके । एसे समाग्री के रखरखाव के प्रति पूरी तरह ध्यान दिया जाना चाहिये ताकि उसका पुनःपुनः उपयोग किया जा सके। उपरोक्त बिन्दु में तो चित्रकला का सीधा ही स्परूप परिलक्षित होता है परन्तु अन्य क्रियाकलापों में भी चित्रकला का परोक्ष में बहुत ही योगदान होता है- जैसे अभिनय के साथ पात्रों को रूप सज्जा, वेश-भूषा, पार्श्व दृश्य निर्माण एवं मंच की साज-सज्जा आदि। ऐसे अवसरो पर छात्रों को उनकी क्षमताओं के अनुसार सामूहिक रूप से कार्य करने हेतु प्रेरित करना चाहिये।

माध्यम -पैंसिल, पेन एवं स्याही, जल रंग, टेम्परा, पेस्टल तथा कोलाज।

कक्षा 10

निर्देश : (अ) कक्षा 9 में सुझाये गये बिन्दु 1,2,3 एवं भाग "ब" की स्तरीय पुनरावृति कराई जावे एवं जो संधारणायें कक्षा 9 में अपूर्ण रह गई हों उन पर विशेष ध्यान दिया जाकर उन्हें छात्रों में सुग्राह्य किया जावे। साथ हो माध्यमों के सही उपयोग के प्रति छात्रों को अग्रसर किया जावे।

(अ) **रंग चार्ट**

प्रथम रंग – लाल, नीला तथा पीला

द्वितीय रंग – प्राथमिक रंगो के मिश्रण से बने रंग

परांग चार्ट के अनुसार

तीन प्राथमिक रंग : पीला और नीला

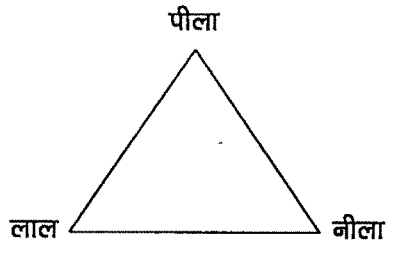

तीन प्राथमिक एवं तीन द्वितीय रंग

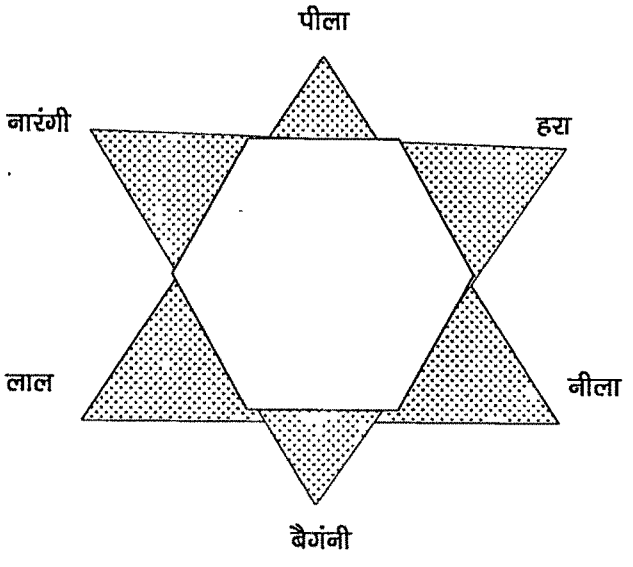

प्राथमिक रंग – लाल, पीला, और नीला

द्वितीय रंग – नारंगी, हरा और बैगनी

पीला + लाल = नारंगी

पीला + नीला = हरा

लाल + नीला = बैंगनी

तृतीय रंग – द्वितीय रंग वर्ण के मिश्रण से तृतीय रंग वर्ण कम बनता है।

केसरिया और बैंगनी, मिश्रित हरा और हरा मिश्रित बैंगनी – मिश्रित केसरिया।

नोटः जा रंग अधिक मात्रा में होगा असका प्रभाव मिश्रण में अधिक रहेगा।

मूल्यांकन

कला शिक्षा का मूल उद्देश्य यह है कि बालक अपनी सृजनात्मकता की भली प्रकार अभिव्यक्ति दे सके। जैसा कि संधारणा में स्पष्ट किया गया है बालक की यह अभिव्यक्ति उसकी भाव भंगिमा, उसके स्वर और उसके चित्रांकन के माध्यम से सबके सामने हो पाती है अतः विषय का मूल्यांकन करते समय बालक को उसके प्रत्येक व्यवहार के समय देखते रह कर निरन्तर रूप से अध्यापक के द्वारा मूल्यांकन करते रहना आवश्यक होगा। व्यवहारगत परिवर्तन के मूल्यांकन के साथ ही सामान्य सैद्धान्तिक ज्ञान का भी अकंन हो सके इस दृष्टि से तथा अन्य विषयों के मूल्यांकन से सममूल्यता रखने की दृष्टि से मूल्यांकन की निम्नलिखित योजना निश्चित की जाती है:-

1. तीन सामयिक परीक्षाएं : 3 ग 10 : 30 अंक

सामान्यतः अन्य विषयों के समान ही तीन मासिक परीक्षाएं हों। प्रत्येक मासिक परीक्षा 10 अंक की हो जिसमें बालक को चार प्रश्नों के उत्तर लिखना आवश्यक हो। एक प्रश्न सामान्य कला शिक्षा का तथा एक एक प्रश्न तीनों विधाओं पर हो।

कक्षा 9

3. वार्षिक परीक्षा

(अ) समन्वित प्रयोग : 30 अंक

वर्ष भर में प्रत्येक विषय की कम से कम दो-दो प्रवृतियों में बालक द्वारा भाग लेते समय उसके संभागीत्व और स्तर को देखकर मूल्यांकन किया जावे। अध्यापक को अपनी अध्यापक डायरी में इसका विवरण रखना होगा और वर्ष में जब भी, जिस अवसर पर भी बालक सम्बन्धित प्रवृत्ति में भाग ले उसी समय उनका मूल्यांकन करते रहना होगा।

(1)	नाट्य कला - दो अवसरों पर	-	10 अंक
(2)	संगीत - दो अवसरों पर	-	10 अंक
(3)	चित्रकला - दो अवसरों पर	-	10 अंक

(ब) प्रायोगिक परीक्षा – 40 अंक

(1) नाट्य कला – 10 अंक
(2) संगीत – 15 अंक
(3) चित्रकला – 15 अंक

योग 100 अंक

कक्षा 10

कक्षा 10 में भी कक्षा 9 के समान ही मूल्यांकन योजना रहेगी, केवल समन्वित प्रयोग के स्थान पर सबमिशन कार्य का मूल्यांकन किया जावेगा । यथा :-

(1) सामयिक परीक्षाएं – 3 3X10 – 30 अंक
(2) सबमिशन कार्य – 30 अंक

कार्य की मात्रा एवं संकलन में चयन 5
कार्य का स्तर 10
सबविधाओं का प्रतिनिधित्व 15

नाट्क कला 5 अंक
संगीत 5 अंक
चित्रकला 5 अंक

– 40 अंक

वार्षिक प्रायोगित परीक्षा

नाट्क कला 5 अंक
संगीत 5 अंक
चित्रकला 5 अंक

योग 100 अंक

कुल 200 अंकों में से प्राप्ताकों को निम्नलिखित प्रकार से श्रेणी में परिवर्तित कर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को सैकण्डरी परीक्षा के नियमित छात्रों के उपस्थिति विवरण के साथ ही भेजा जाना आवश्यक है।

प्राप्तांक	श्रेणी	विवरण
81 से 100 प्रतिशत (151 से 200 अंक)	अ	उत्कृष्ट
61 से 80 प्रतिशत (121 सें 160 अंक)	ब	बहुत अथवा
41 से 60 प्रतिशत (81 से 120 अंक)	स	अच्छा
21 से 40 प्रतिशत (41 से 80 अंक)	द	सामान्य
0 से 20 प्रतिशत (0 से 40 अंक)	ई	समान्य से नीचे

"कला शिक्षा" सृजनात्मक अभिव्यक्ति कौशल की शिक्षा है अतः सतत् निरन्तर मूल्यांकन में उपयुक्त अवसरों का चयन और वातावरण का सृजन विशेष महत्व रखता है इस दृष्टि से कला शिक्षक को पूर्णतः सजग और सचेष्ट रह कर जिस बालक की जिस विधा का जिस समय अवसर मिले मूल्यांकन करते रहना और उसे अध्यापक डायरी में अकिंत करते रहना नितान्त आवश्यक है। अपने इस प्रकार किए गये मूल्यांकनों में से श्रेणी निर्धारणा हेतु अंक देते समय श्रेष्ठता के आधार पर अंक दिये जाने चाहिये अर्थात् एक बालक का विभिन्न विधाओं में कई बार मूल्यांकन हो सकता है परन्तु श्रेणी निर्धारण के समय प्रत्येक विधा से दो का श्रेष्ठता के आधार पर आलेख तैयरर किया जावे।

विशेषः छात्र के समेकित प्रगति पत्र में अन्य विष्यों की भांति ही परीक्षओं के अंक अंकित किए जा सकते हैं। यथाः –

(1) सामयिक परीक्षाओं से सामयिक परीक्षा के

(2) वार्षिक परीक्षा प्रथम प्रश्नपत्र के कॉलम में समन्वित प्रयोग/सबमिशन कार्य के और

(3) वार्षिक परीक्षा के द्वितीय प्रश्न पत्र के प्रायोगिक का योग अंकित कर कुल योग के स्थान पर 100 में से कुल अंक लिखे जावें।